This question paper contains 7 printed pages]

5385-A1

M.A. (Final) EXAMINATION, 2017

HINDI LITERATURE

Paper V (A)

(रचनाकार का विशेष अध्ययन : जैनेन्द्र कुमार)

Time allowed : Three Hours

Maximum Marks : 100

खण्ड 'अ' [Marks : **20**]

__सभी__ प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर __पचास__ शब्दों से अधिक न हो। __सभी__ प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड 'ब' [Marks : **50**]

प्रत्येक इकाई से __एक__ प्रश्न चुनते हुए, कुल __पाँच__ प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो। __सभी__ प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड 'स' [Marks : **30**]

कोई __दो__ प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो। __सभी__ प्रश्नों के अंक समान हैं।

P.T.O.

खण्ड 'अ'

इकाई I

1. (*i*) जैनेन्द्र की प्रथम औपन्यासिक कृति का नाम व प्रकाशन वर्ष बताइये।

(*ii*) जैनेन्द्र ने टॉलस्टाय की कुछ कहानियों का अनुवाद किस शीर्षक से किया था ? उसका प्रकाशन कब हुआ ?

इकाई II

(*iii*) 'त्यागपत्र' के पुरुष पात्र का मृणाल से क्या संबंध है ? यह किस पुरुष में लिखा गया उपन्यास है ?

(*iv*) 'त्यागपत्र' में नारी जीवन की किस समस्या को उकेरा गया है ?

इकाई III

(*v*) उसने कहा, 'सुनती नहीं हो कि कोई क्या कह रहा है ?............क्या मैं बकते रहने के लिए हूँ ?' यह कथन किसने, किससे कहा तथा किस रचना से उद्धृत है ?

(*vi*) मैंने कहा कि तो कहीं तुमने उसे गाड़ दिया है ? क्या किया है ? उक्त कथन में किसने, किसको गाड़ने का उल्लेख है। स्पष्ट कीजिये।

इकाई IV

(*vii*) जैनेन्द्र के किन्हीं **चार** निबन्धों के नाम लिखिये।

(*viii*) जैनेन्द्र के संकलित निबन्धों की प्रमुख विषय-वस्तु क्या रही है ?

इकाई V

(*ix*) जैनेन्द्र ने मैटरलिंक के नाटकों का हिंदी अनुवाद किस-किस नाम से किया ? प्रकाशन वर्ष सहित किन्हीं **दो** का नामोल्लेख कीजिए।

(*x*) जैनेन्द्र के समकालीन **चार** मनोविश्लेषणवादी कहानीकारों के नाम बताइये।

खण्ड 'ब'

इकाई I

2. 'हिन्दी' उपन्यास के इतिहास में जैनेन्द्र मनोविश्लेषणात्मक परम्परा के प्रवर्तक माने जाते हैं। इस कथन की तर्कसम्मत विवेचना कीजिए।

अथवा

3. 'जैनेन्द्र कथा साहित्य में पात्रों को सामान्य गति में सूक्ष्म संकेतों की निहिति द्वारा खोज करके बड़े ही कौशल से प्रस्तुत करते हैं।' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

इकाई II

4. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

''जो बाहर हो वही भीतर। भीतर पशु हो तो इस जलवायु में आकर बाहर की मनुष्यता एक क्षण भी नहीं ठहरेगी। मनुष्य हो तो भीतर तक मनुष्य होना होगा। कलई वाला सदाचार यहाँ खुलकर उघड़ा रहता है। यहाँ खरा कंचन ही टिक सकता है, क्योंकि उसे जरूरत नहीं कि वह कहे मैं पीतल नहीं हूँ। पीतल से परहेज नहीं है। इससे पीतल रखकर ऊपर कंचन दिखने वाला लोभ यहाँ छन-भर भी टिकता नहीं है। बल्कि यहाँ पीतल का मूल्य है। इससे सोने के धैर्य की यहाँ परीक्षा है।

अथवा

5. 'त्यागपत्र' की नायिका का चारित्रिक विश्लेषण कीजिए।

इकाई III

6. हमारा लक्ष्य बुद्धि को चारों ओर से जगाना है, उसे आतंकित करना नहीं। सरकार व्यक्ति के और राष्ट्र के विकास के ऊपर बैठकर उसे दबाना चाहती है। हम इसी विकास के अवरोध को हटाना चाहते हैं—इसी को मुक्त करना चाहते हैं। जो शक्ति के मद में उन्मत्त है, असली काम तो उसका मद उतारने और उसमें कर्त्तव्य-भावना का प्रकाश जगाने का है। हम स्वीकार करें कि मद उसकी टक्कर खाकर चोट पाकर ही उतरेगा।

अथवा

7. जैनेन्द्र की 'पाजेब' कहानी की मूल संवेदना को स्पष्ट करते हुए उसके पात्रों का मनोविश्लेषणपरक चरित्र का चित्रण कीजिए।

इकाई IV

8. जैनेन्द्र के निबन्धों की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा

9. सोदाहरण सिद्ध कीजिये कि "जैनेन्द्र के निबन्ध वैचारिक गहनता के गुण से परिपूरित हैं।"

इकाई V

10. मनोविश्लेषणवादी परम्परा के हिंदी उपन्यासकारों में जैनेन्द्र का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा

11. जैनेन्द्र के कथेतर साहित्य पर एक लेख लिखिये।

खण्ड 'स'

इकाई I

12. जैनेन्द्र का वैयक्तिक एवं साहित्यिक मूल्यांकन कीजिए।

इकाई II

13. 'त्यागपत्र' उपन्यास की प्रमुख समस्याओं को उद्‌घाटित कीजिए।

इकाई III

14. जैनेन्द्र की कहानी-कला पर एक विचारपरक निबन्ध लिखिये।

इकाई IV

15. जैनेन्द्र के निबन्धों की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

इकाई V

16. समकालीन कहानीकारों में जैनेन्द्र के योगदान को स्पष्ट कीजिए।